बाईबल
की
विचित्र बातें

एक सामान्य व्यक्ति से भी यह अपेक्षा की जाती है कि यदि वह अपनी बात अन्य व्यक्तियों के द्वारा मनवाना चाहे तो वह बात तर्क पूर्ण हो, अन्यथा अन्य व्यक्ति उसे स्वीकार नहीं करेंगे। जब सामान्य व्यक्ति से भी यह अपेक्षा की जाती है तो ईश्वरीय ज्ञान तो निश्चित रूप से तर्कपूर्ण होना चाहिए, अर्थात् तर्क की तराजू पर सही उतरे। कारण कि ईश्वरीय ज्ञान भविष्य के लिये, सम्पूर्ण मानव जाति के लिये, जिसमें बुद्धिमान व्यक्ति भी निश्चित रूप से होंगे, निर्देश देता है। बेतुकी बातें, जिनका कोई तार्किक आधार न हो, वे कल्पना तो हो सकती है, पर ईश्वरीय कदापि नहीं। सत्यवचन महाराज के अनुसार अन्धश्रद्धा तो हो सकती है, पर बुद्धिपूर्ण श्रद्धा नहीं।

बाइबिल अतार्किक बातों का एक अच्छा संग्रह है। उदाहरण प्रस्तुत हैं:–

१. आकाश की रचना

"परमेश्वर ने आरम्भ में आकाश और पृथ्वी को रचा।"

उत्पति १:१

यह बाइबिल का प्रथम वाक्य है।

आरम्भ में आकाश को रचा। आकाश कहते हैं शून्य/खाली स्थान को। क्या खाली स्थान बनाया जाता है? स्थान होता है। और यदि वहां कुछ वस्तु है तो उसे हटाकर स्थान खाली किया जाता है। क्या बाइबिल के अनुसार परमेश्वर के द्वारा स्थान बनाने के पूर्व स्थान था ही नहीं? यदि नहीं था तो स्वयं परमेश्वर कहां था। यदि परमेश्वर था तो स्थान भी था। बिना स्थान के परमेश्वर भी कहां होगा। कण-कण में परमेश्वर को मानने पर भी वे कण-कण कहीं तो होंगे और वे स्थान पर, या में ही होंगे।

बाइबिल में आकाश को उल्टे कटोरे की भांति एक ठोस वस्तु माना गया है (देखिये पृष्ठ........) यदि परमेश्वर ने पहले ही वाक्य में उल्टे कटोरे वाली ठोस वस्तु बनाई है तो फिर सृष्टि निर्माण के दूसरे दिन, निम्नलिखित वाक्यों में क्या बनाया।

> **"परमेश्वर ने मेहराब बनाया तथा मेहराब के ऊपर के जल को, उसके नीचे के जल से अलग किया। ऐसा ही हुआ। परमेश्वर ने मेहराब को 'आकाश' नाम दिया"।**
>
> *उत्पति १:७-८*

उत्पति के पहले और सातवें-आठवें वाक्य के आकाश में क्या अन्तर है कहीं स्पष्ट नहीं है।

अंग्रेजी बाइबिल में आकाश के लिये 'हेवन' शब्द है। आक्सफोर्ड शब्दकोष के अनुसार 'हेवन' का अर्थ शाब्दिक रूप से 'आकाश' ही होता है। इसके अतिरिक्त 'हेवन' का अर्थ वह स्थान भी होता है जहां परमेश्वर का निवास माना जाता है एवं जहां मृत्यु के पश्चात अच्छे लोगों का रहना माना जाता है, अर्थात् स्वर्ग।

अब बाइबिल के प्रथम वाक्य में यदि स्वर्ग शब्द लिया जाय जहां परमेश्वर निवास करता है तो भी बात तर्कपूर्ण नहीं बनेगी। कारण कि बाइबिल के अनुसार ही परमेश्वर आग और बादल में (निर्गमन १३:२१), पर्वत पर (निर्गमन १९:३, १९:२०, २४:२, ९, १२, १५, १६), वेदी के पास निवास स्थान में (निर्गमन २५:८), तम्बू में (निर्गमन ३३:७), सघन अन्धकार में (१ राजा ८:१२, भजन संहिता १८:११, ९७:२) और भवन में (१ राजा ८:१३, १ इतिहास १७:१२) रहता है। तो फिर परमेश्वर को सृष्टि निर्माण के भी पहले अपने लिये अतिरिक्त निवास स्वर्ग की आवश्यकता क्यों पड़ी?

अब यदि स्वर्ग का अर्थ उस स्थान से लिया जाय जहां अच्छे मनुष्य या स्पष्ट रूप से यहूदी/ईसाई मरने के पश्चात जाते हैं तो उसे इतना शीघ्र बनाने की कोई आवश्यकता ही नहीं थी। कारण कि व्यक्तियों को स्वर्ग में जाने की अनुमति तो न्याय दिवस के पश्चात ही होगी और वह अभी आया ही नहीं। तो जो स्थान अभी तक काम में ही नहीं आया उसको सृष्टि निर्माण से भी पहले बनाना तर्क पूर्ण नहीं लगता।

इस प्रकार बाइबिल के प्रथम वाक्य में 'आकाश' का चाहे जो कुछ

अर्थ लगाया जाए, अनेक प्रश्न अनुत्तरित ही रहेंगे। और यहां आकाश का बनाना तर्कपूर्ण नहीं है। क्योंकि वह था।

२. परमात्मा का शरीर–

''जल की सतह पर परमेश्वर का आत्मा मंडराता था।''

उत्पति १:२

इसके पश्चात उत्पति १:३ से उत्पति १:२५ तक परमेश्वर के द्वारा ५ दिनों में सृष्टि की उत्पति का वर्णन है। इसके पश्चात छठे दिन,

''परमेश्वर ने कहा–'हम मनुष्य को अपने स्वरूप में, अपने सदृश्य बनाएं.....'। अतः परमेश्वर ने अपने स्वरूप में मनुष्य को रचा।''

उत्पति १:२६,२७

उत्पति १:२ में जल की सतह पर परमेश्वर का शरीर नहीं वरन् आत्मा मंडराता था। और उत्पति १:२६,२७ में परमेश्वर मनुष्य की भांति शरीरधारी हो गया। जबकि उत्पति १:३ से उत्पति १:२५ तक कहीं भी यह वर्णन नहीं है कि परमेश्वर ने कब और क्यों शरीर धारण किया। जब पूरी सृष्टि का निर्माण बिना शरीर धारण किये हुए हो सका, तो मानव का निर्माण भी बिना परमात्मा के शरीर के क्यों नहीं हो सका। शरीर धारण की आवश्यकता क्यों पड़ी? जब विभिन्न जीवधारियों को विभिन्न स्वरूपों में, स्वयं बिना कोई स्वरूप धारण किए बनाया, तो इसी प्रकार मनुष्य को बनाते समय स्वरूप धारण की आवश्यकता क्यों पड़ी?

३. मनुष्य का जीवन साथी पशु–पक्षियों में से–

प्रभु परमेश्वर ने कहा, ''मनुष्य का अकेला रहना अच्छा नहीं, मैं उसके उपयुक्त एक सहायक बनाऊंगा। अतः प्रभु परमेश्वर ने मिट्टी से समस्त पशु और आकाश के सब पक्षी गढ़े। वह उन्हें मनुष्य के पास लाया।...
मनुष्य ने सब पालतू पशुओं, आकाश के पक्षियों और वन पशुओं के नाम रखे; किन्तु मनुष्य के लिए उसके उपयुक्त सहायक नहीं मिला।

उत्पति २:१८-१९,२०

इस प्रकार परमेश्वर तो चाहता था कि मनुष्य परमेश्वर के गढ़े हुए, पशु-पक्षियों में से अपने लिये कोई सहायक चुन ले। परन्तु मनुष्य की बुद्धि को अत्यधिक धन्यवाद कि मनुष्य को उन पशु-पक्षियों में से, अपने लिये कोई सहायक नहीं मिला। अन्यथा आप कल्पना कर सकते हैं कि क्या स्थिति होती?

मनुष्य के लिए पशु-पक्षियों में सहायक-जीवन-साथी ढूंढना क्या कोई बुद्धिमतापूर्ण कार्य था?

यद्यपि उपरोक्त उद्धरण में जीवन-साथी शब्द का प्रयोग नहीं है, पर सहायक से परमात्मा का तात्पर्य जीवन-साथी ही था। यहां उपरोक्त में जीवन-साथी न मिलने पर ही, अगले ही वाक्य उत्पति २:२१ से स्त्री को बनाने की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई और वाक्य का प्रारम्भ "अतः" से है। जिसका अर्थ है "पूर्व प्रयास में असफल रहने पर" इस प्रकार मनुष्य के पास पशु-पक्षी लाने में परमेश्वर का उद्देश्य मनुष्य के लिये जीवन-साथी चुनना ही था।

४. स्त्री मनुष्य की एक पसली से-

> "तब प्रभु परमेश्वर ने मनुष्य को भूमि की मिट्टी से गढ़ा...
> अतः प्रभु परमेश्वर ने मनुष्य को गहरी नींद में सुला दिया। जब वह सो रहा था तब उसकी पसलियों में से एक पसली निकाली और उस रिक्त स्थान को मांस से भर दिया। प्रभु परमेश्वर ने उस पसली से, जिसको उसने मनुष्य में से निकाला था, स्त्री को बनाया और उसे मनुष्य के पास लाया।"

उत्पति २:७,२१-२२

जब मनुष्य को मिट्टी से बनाया तो स्त्री को भी उसी प्रकार से क्यों नहीं बनाया जा सका? और यदि स्त्री पुरुष की एक पसली से बनी है तो स्त्रियों के शरीर में एक-एक ही पसली होना चाहिये। पर वास्तविकता में स्त्रियों के उतनी ही पसलियां होती हैं, जितनी मनुष्य के। अतः बाइबिल का यह सृष्टिक्रम सामान्य सृष्टि नियम के विरुद्ध है कि स्त्रियां इस प्रकार से नहीं बनीं।

५. एक जलयान में संसार के सभी जीवधारी–

"इस रीति से तू जलयान बनाना; जलयान की लम्बाई डेढ़ सौ मीटर, चौड़ाई पच्चीस मीटर, और ऊंचाई पन्द्रह मीटर रखना। जलयान में एक झरोखा बनाना, ओर उसके आधा मीटर ऊपर छत बनाना। जलयान में एक ओर द्वार रखना। तू जलयान को तीन खण्डों का बनाना...।

प्रत्येक जाति के जीवित प्राणियों में से दो-दो नर और मादा,

अपने साथ जलयान में ले जाना...।

हर एक प्रकार का भोज्य पदार्थ, जो खाया जाता है, एकत्र कर लेना।

वह तेरे और उनके भोजन के लिए होगा...।

तू सब शुद्ध पशुओं में से नर और मादा के सात जोड़े, और

अशुद्ध पशुओं में से नर-मादा का एक-एक जोड़ा लेना।

आकाश के पक्षियों में से नर और मादा के सात जोड़े लेना...।

जिस वर्ष नूह छः सौ वर्ष का हुआ, उसके दूसरे महीने के सत्रहवें दिन महासागर के झरने फूट पड़े, आकाश के झरोखे खुल गए,...

उसी दिन नूह ने...जलयान में प्रवेश किया...।

पृथ्वी पर चालीस दिन तक प्रलय होता रहा...।

जल पृथ्वी पर एक सौ पचास दिन तक प्रबल रहा...।

जिस वर्ष नूह छः सौ एक वर्ष का हुआ उसके पहले महीने के पहले दिन पृथ्वी का जल सूख गया...।

दूसरे महीने के सत्ताइसवें दिन भूमि पूर्णतः सूख गई।

उत्पति ६:१५-१६,१९,२१, ७:२-३, ११,१३,१७,२४, ८:१३,१४

अब पाठकगण विचार करें–

जलयान था १५०x२५ मीटर का और उसमें तीन खण्ड थे तो कुल क्षेत्रफल हुआ १५०x२५x३=११२५० वर्ग मीटर या ११२५० वर्ग मीटर x१.१९६ वर्ग गज प्रति मीटर x९ वर्ग फीट प्रति गज =१,२१,०९५ वर्ग फीट, या (१५० मीटर लम्बाई x१.०९४ गज प्रति मीटरx३ फीट प्रति गज) x (२५ मीटर चौड़ाई =१२११८० वर्ग फीट (या मोटे तौर पर ३४८ फीट लम्बी व ३४८ फीट चौड़ी जगह) और इसमें संसार के सभी थलचर एवं नभचर प्राणियों के दो-दो जोड़े (या शुद्ध पशुओं को दो या सात जोड़े, परमेश्वर को भी निश्चित नहीं) वर्ष भर से अधिक–१ वर्ष १० दिन अपने भोजन, पानी सहित रहे। इस भोजन में कई एक मांसाहारी पशुओं का भोजन मांसाहारी या शाकाहारी पशु होंगे, उनका भी एक वर्ष का भोजन, पानी।

क्या इस छोटे से क्षेत्र में संसार के सभी जाति के प्राणियों के दो या सात जोड़े, वर्ष भर के भोजन सहित रखना सम्भव है? कदापि नहीं।

साथ ही हर खण्ड की ऊंचाई थी ५ मीटर अर्थात् ५x१:०९४x३= १६.४१ फीट। और उस समय तो सम्भवतः पृथ्वी पर डायनासोर, मेमथ, भी रहे होंगे। ये प्राणी, और हाथी, ऊंट, जिराफ आदि किस प्रकार रहे होंगे?

६. विजय हाथ उठाने पर निर्भर–

> **''जैसा मूसा ने यहोशू से कहा था, वैसा ही उसने किया। उसने अमालेक जाति से युद्ध किया। मूसा, हारून और हूर पहाड़ी की चोटी पर गये। जब-जब मूसा अपना हाथ ऊपर उठाते तब-तब इस्राएली जीतते। किन्तु जब वह अपना हाथ नीचे कर लेते तक अमालेक जाति जीत जाती। मूसा के हाथ थक गये। अतएव हारून और हूर ने एक पत्थर लिया और उसको नीचे रखा। मूसा उस पर बैठ गए। हारून और हूर उनके हाथ संभाले रहे। एक उनकी बाईं ओर था, दूसरा दाहिनी ओर। अतः उनके हाथ सूर्यास्त तक उठे रहे। यहोशू ने अपनी तलवार की धार से अमालेक जाति को परास्त कर दिया।''**

निर्गमन १७:११-१३

विजय प्राप्त करने के लिये युद्ध करना पड़ता है, पर यहां तो मूसा के युद्ध करने पर नहीं वरन् मात्र दोनों हाथ ऊपर उठाने पर ही इस्राएलियों की विजय हो गई। यह किस प्रकार संभव है? पाठक विचार करें। यहोशू की तलवार शायद कम शक्तिशाली थी।

७. मछली के पेट में प्रार्थना और जीवित वापस।

> **"प्रभु के आदेश से एक बड़ा मच्छ योना को निगल गया। योना तीन दिन और तीन रात उस मच्छ के पेट में पड़ा रहा।...**
> **योना ने मच्छ के पेट में अपने प्रभु परमेश्वर से प्रार्थना की।**
> **....प्रभु ने मच्छ को आदेश दिया, उसने योना को समुद्र तट पर उगल दिया।"**

योना १:१७; २:१,१०

अब विचार करें—मछली कितनी ही बड़ी हो कि उसे मच्छ कहा जाय, उसके पेट में कोई आदमी जीवित, वह भी तीन दिन और तीन रात तक—रहना संभव है क्या? भूखे-प्यासे तो रहा जा सकता है पर बिना सांस के मच्छ के पेट में कैसे रहा होगा? क्या उसमें इतनी जगह होती है? क्या तीन दिन और तीन रात तक मच्छ के पाचन तन्त्र ने भी काम करना बन्द कर दिया था? कि योना को पचाया नहीं गया।

बाइबिल के विभिन्न सम्पादकों को भी स्वयं इस पर शंका रही कि मच्छ के पेट में रहना कैसे सम्भव है, तो सोचा व्हेल में सम्भव होगा, क्योंकि उसका आकार बड़ा है। अतः योना की पुस्तक में "बड़ी मछली" रहने पर भी, मत्ती १२:४० में उसे व्हेल कहकर सन्दर्भित किया गया।[१] पर आक्सफोर्ड शब्दकोष के अनुसार व्हेल मछली नहीं वरन् पानी में रहने वाला जानवर है। अतः बाद की बाइबिल में उसे जल-जन्तु[२] या समुद्री मोनस्टर[३] कहा गया। पर पुनः शब्दकोष के अनुसार मोनस्टर एक बड़ा भद्दा और भयानक पर काल्पनिक जीव, केवल कहानियों में होता है। अतः फिर बाद की बाइबिल में उसे पुनः

---

१. होली बाइबिल
२. हिन्दी बाइबिल मत्ती १२.४०
३. होली बाइबिल-आक्सफोर्ड

बड़ी मछली[1] कहकर सन्दर्भित किया गया।

विचार कीजिये—एक असम्भव बात को सही ठहराने के लिये कितनी उठा-पटक करनी पड़ी। पर फिर भी शंका वहीं की वहीं रही कि मच्छ, व्हेल, जल-जन्तु, समुद्री मोनस्टर, या बड़ी मछली, चाहे जो कुछ भी हो, के पेट में कोई व्यक्ति तीन दिन और तीन रात तक—बहत्तर घण्टे-बिना सांस लिये, उस प्राणी के पाचन तन्त्र को निष्क्रिय करके, अर्थात् उसका भी तीन दिन का उपवास-जीवित रहना किस प्रकार संभव है? यह सम्भव नहीं है।

एक विचारणीय बात और। उस मच्छ/प्राणी ने योना को निगला भी प्रभु के आदेश से और उगला भी प्रभु के आदेश से। आखिर प्रभु चाहता क्या था? ठीक से निश्चय नहीं कर सकता था क्या?

८. दो व्यक्तियों की बीमारी २००० सुअरों में—

> **"जब यीशु दूसरे तट पर गदरेनियों के प्रदेश में आए तब उन्हें भूत से जकड़े हुए दो मनुष्य मिले। वे कबरों के मध्य से निकल कर आए थे।...**
> **भूतों ने निवेदन किया, "यदि आप हमें निकाल ही रहे हैं तो हमें सूअरों के झुण्ड में भेज दीजिए।"**
> **यीशु ने उनसे कहा, "जाओ।"**
> **वे निकल कर सूअरों के झुण्ड में समा गए और वह सारा झुण्ड कगार से झील की ओर झपटा और जल में डूब मरा।"**

मत्ती ८:२८,३१-३२

> **"यीशु ने अनुमति दे दी। अशुद्ध आत्माएं निकल कर सूअरों में समा गई, और दो हजार का वह विशाल झुण्ड कगार से झील की ओर झपटा और उसमें डूब गया।"**

मरकुस ५:१३

यद्यपि हिन्दी बाइबिल में "कबरों के मध्य से निकल कर" वाक्यांश है, पर अंग्रेजी बाइबिल में "कबरों में से" है। अब कोई सामान्य व्यक्ति विचार करे कि क्या कबरों में से भी कोई व्यक्ति

---

१. ओपन बाइबिल

निकल कर आ सकता है? पर यहां निकला।

मत्ती के द्वारा किये गये वर्णन में दो मनुष्य भूत से जकड़े हुए थे। पर मरकुस ५:२ के अनुसार "एक अशुद्ध आत्मा से जकड़ा हुआ मनुष्य" अर्थात् मनुष्य भी एक था और अशुद्ध आत्मा भी एक थी। पर मरकुस ५.९ के अनुसार "हम असंख्य अशुद्ध आत्माएं हैं।"

अब बाइबिल के सम्पादक निर्णय करें कि मनुष्य एक था या दो व भूत या अशुद्ध आत्मा भी एक थी या असंख्य।

फिर यद्यपि भूतों या अशुद्ध आत्माओं का अस्तित्व स्वीकार नहीं किया जाता, पर जो लोग इन बातों पर विश्वास करते हैं, वे भी यह विश्वास नहीं कर पायेंगे कि दो भूत या अशुद्ध आत्माएं व्यक्तियों से निकलकर २००० सूअरों में समा गई और इस कारण वे सूअर झील में डूबकर मर गए।

दो व्यक्तियों में से भूतों को निकाल कर दो सूअरों में समाते तो भी गणित ठीक रहता, पर दो भूतों को २००० सूअरों में समाने पर एक-एक सूअर में १/१००० भूत ही आया। यह क्या तर्क था? क्या यह दो सूअरों में सम्भव नहीं था? व्यर्थ हजारों सूअरों को क्यों डुबाया?

आखिर ईसा, जो भेड़ों को प्यार से उठाये दिखाए जाते हैं, इन दो हजार सूअरों पर दया क्यों नहीं कर सके? उन्हें क्यों डूबने दिया? वे भी तो आखिर प्राणी थे। पता नहीं उपचार की यह विधि ईसाई अस्पतालों में अभी प्रचलित है या नहीं?

पर सामान्य रूप से न तो यह वर्णन, और न ही यह उपचार विधि, बुद्धि-पूर्ण लगती है। विवरण पूर्णतः तर्क-हीन है।

९. अक्षत आटा, तेल व थोड़े से अनेक रोटियां व मछलियां

(अ) "...मेरे घर में पका हुआ भोजन नहीं है, घड़े में मुट्ठी भर आटा और कुप्पी में नाम मात्र को तेल है।

...

इस्राएली राष्ट्र का प्रभु परमेश्वर यों कहता है, 'जिस दिन तक मैं भूमि पर वर्षा नहीं करूंगा, उस दिन तक घड़े का आटा समाप्त नहीं होगा और कुप्पी का तेल नहीं चुकेगा।' अतः वह गई। उसने एलियाह के कथन के अनुसार कार्य किया। नबी, विधवा और उसका पुत्र

अनेक दिन तक खाते रहे। न घड़े का आटा समाप्त हुआ और न कुप्पी का तेल चुका। जैसा प्रभु ने एलियाह के माध्यम से कहा था।''

१ राजा १७:१२,१४-१६

(आ) ''विधवा ने कहा, 'आपकी सेविका के पास, तेल की एक कुप्पी के अतिरिक्त कुछ नहीं है।'
...पुत्र उसके पास बर्तन लाते गए और वह उनमें तेल उँडेलती गई। जब सब बर्तन तेल से भर गए तब उसने अपने एक पुत्र से कहा, 'मेरे पास और बर्तन ला। पुत्र ने कहा, 'अब और बर्तन नहीं हैं' तब तेल बहना तत्काल बन्द हो गया।''

२ राजा ४:२, ५-६

(इ) ''तब यीशु ने जन समूह को घास पर बैठने की आज्ञा दी यीशु ने पांच रोटी और दो मछली ली, और आकाश की ओर देखकर आशीष मांगी, तब उन्होंने रोटियां तोड़कर शिष्यों को दी, और शिष्यों ने लोगों को। सबने भोजन किया और तृप्त हुए। शिष्यों ने बचे हुए टुकड़ों से भरी बारह टोकरियां उठाईं। भोजन करने वाले पुरुषों की संख्या, स्त्रियों और बालकों के अतिरिक्त, लगभग पांच हजार थी।''

मत्ती १४:१९-२१

(ई) ''यीशु ने उनसे पूछा, 'तुम्हारे पास कितनी रोटियां हैं?'''
वे बोले –'सात, और कुछ मोटी मछलियां।'
यीशु ने जन समूह को भूमि पर बैठने की आज्ञा दी। तत्पश्चात उन्होंने सात रोटी और मछलियां लीं और धन्यवाद करके तोड़ी; और शिष्यों को दी, एवं शिष्यों ने जन समूह को।
सबने भोजन किया और तृप्त हुए; और शिष्यों ने बचे हुए टुकड़ों से भरे सात टोकरे उठाए। भोजन करने वाले, स्त्री-बच्चों के अतिरिक्त चार हजार पुरुष थे।

मत्ती १५:३४-३८

(उ) **यीशु ने उनसे कहा,...**
मैं तुमसे सच कहता हूँ–"यदि तुमनें राई के दाने बराबर भी विश्वास हो तो तुम इस पहाड़ से कहोगे, 'यहां से वहां हट जा', तो वह हट जाएगा, और तुम्हारे लिए कुछ भी असम्भव न होगा।"

मत्ती १७:२०

यदि इस प्रकार के अक्षत आटा, तेल हों और पांच रोटियों व दो मछलियों से पांच हजार से अधिक व्यक्तियों को, और सात रोटियों व कुछ मछलियों से चार हजार से अधिक व्यक्तियों को भोजन कराया जाना सम्भव हो और विश्वास के आधार पर कुछ भी असम्भव न हो तो फिर दुनिया के अनेकानेक भागों में भुखमरी क्यों? जबकि वहां अनेक ईसाई धर्मगुरु एवं प्रचारक होंगे ही सही। इस विधि से जहां अनेकानेक लोग मौत के मुंह में जाने से बच जायेंगे, वहीं पूरा विश्व भी इस प्रकार के लोकोपयोगी चमत्कारों से प्रभावित होकर उनका अनुयायी बन जाएगा।

वास्तविकता में ऐसा होना सम्भव ही नहीं है। केवल भोले लोगों को प्रभावित कर अपने चंगुल में फंसाने की तरकीब है। यदि इस प्रकार के चमत्कार सम्भव होते तो स्वयं ईसा को अंजीर के पेड़ को श्राप न देना पड़ता। (मत्ती २१:१९) और जैसा कि उन्होंने ऊपर उद्धृत (मत्ती १७:२०) में विश्वास के लिये कहा और फिर मत्ती २१:२१-२२ में कहा, "यदि तुम विश्वास करो और सन्देह न करो...

'यदि तुम इस पहाड़ को आदेश दोगे, 'उठ और समुद्र में जा गिर' तो "यह भी हो जाएगा।''' पर ईसा स्वयं अपने विश्वास से किसी पहाड़ को समुद्र में गिराना तो दूर, अंजीर के वृक्ष पर अंजीर ही लगा कर खा लेते तो निर्दोष वृक्ष को बिना कारण, श्राप तो न देना पड़ता, या अन्य किसी प्रकार से कुछ खाने का प्रबन्ध कर लेते।

जैसे जादू के खेल में जादूगर कुछ ही समय में बीज/गुठली बोकर आम के पौधे से आम भी ले लेता है, उसी प्रकार से सामान्य लोगों को प्रभावित करने के लिये ये उपरोक्त चमत्कार हैं।

ईसाई मत में, विशेषत: कैथोलिक सम्प्रदाय में, सन्त श्रेणी प्रदान करने की विशेष प्रक्रिया है, जिसमें विशेष रूप से उस व्यक्ति के

चमत्कारों की जांच की जाती है। ज्यादातर ये चमत्कार रोगों के ठीक होने से सम्बन्धित होते हैं कि शरीर के रोगग्रस्त भाग पर उस सन्त का चित्र रखा गया तो वह भाग रोग मुक्त होकर व्यक्ति स्वस्थ हो गया। यह एक सामान्य बात है कि यदि दस व्यक्ति किसी भी वस्तु के सामने कुछ मन्नत मानें, या रोग-मुक्त होने की इच्छा करें, तो सम्भव है उनमें से एक दो की इच्छापूर्ति हो जाय, या वे बिना किसी उपचार के रोग-मुक्त हो जायें, तो जिन आठ-नौ व्यक्तियों की इच्छापूर्ति नहीं हुई न तो वे इसका प्रचार कर पाएंगे और न ही कोई उनकी बात सुनेगा या उनके अनुभव से शिक्षा लेगा, पर इसके विपरीत जिन एक दो व्यक्तियों की इच्छापूर्ति हुई न केवल वे इसका ढिंढोरा पीटेंगे कि उन पर विशेष कृपा हुई, या वे विशेष प्रियजन या कृपा पात्र हैं वरन् जिन-जिन का भी इस घटना से हित साधन होता हो, वे इसका विशेष प्रचार करेंगे।

इन सन्तों ने आज तक ऐसा चमत्कार नहीं किया कि अमुक खदान में पानी भर जाने से पानी निकाल दिया और फंसे हुए लोगों को जीवित निकाल लिया। पहाड़ हटाने की बात तो दूर, चमत्कार से पहाड़ में से रास्ता ही निकाल दें। करोड़ों का खर्च बच जाएगा। कोई ऐसा चमत्कार भी नहीं कि जहां अकाल की स्थिति में लोग भूखे मर रहे हों, किसी सन्त ने एक दो क्विंटल अनाज से लाखों लोगों को भोजन कराया। शासन की चिन्ता मिटती, पर ऐसा कहीं कुछ नहीं होता। मात्र भोले लोगों को फंसाया जरूर जाता है।

(ऊ) व्यक्तियों का स्वयं के शवों को देखना–

> ***"उस रात प्रभु का दूत बाहर निकला, और असीरियाई सेना के पड़ाव में एक लाख पचासी हजार सैनिकों का वध कर दिया और प्रातःकाल जल्दी जब वे उठे, देखा वे सब शव थे।"***
>
> *होली बाइबिल २ किंग १९:३६*

यह बाइबिल में ही सम्भव है कि किसी व्यक्ति का वध हो जाने पर भी अगली सुबह वह उठ जाय और देखे कि वह स्वयं शव (मृत) है। आखिर ईश्वर का वचन जो ठहरा।

□□□